Production of Soyabean in Madhya Pradesh

1682. SHRI RAGHAVJI: Will the Minister of AGRICULTURE be pleased to state:

(a) the actual quantity of Soyabean produced in Madhya Pradesh from 1991-92 to 1994-95 year-wise;

(b) what are the reasons for the declining production of Soyabean in 1994-95; and

(c) what measures are being taken to contain this decline in future?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE (SHRI ARVIND NETAM): (a) The production of Soyabean in Madhya Pradesh from 1991-92 to 1994 95 is as follows:

Year	Production ('000' tonnes)
1991-92 . . .	2092 5
1992-93 . . .	2598.9
1993-94 . . .	3480.3
1994-95 . . .	2587.0

(lb) During the year 1994-95, con tinuous and excess rain had an adverse effect on Soyabean sowing resulting into less coverage of area and production.

(c) In order to increase the pro duction and productivity of oilseeds, Oilseed Production Programme (OPP) is being implemented in the State Under the Scheme, assistance is pro vided by the Government of India through the supply of key inputs like production and distribution *of* seeds. seed mini kits, distributeon of improved farm implements. Sprinklers sets, rhyzobium culture, gypsum pyrite, micro-nutrients. organising general and front line demostation and training of farmers.

रासायनिक उर्वरकों का भूमि की उर्वरता पर प्रतिकूल प्रभाव

1683. **श्री राघवजी:** क्या कृषि मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या रासायनिक उर्वरकों के उपयोग से भूमि की उर्वरता पर पड़ने वाले प्रतिकूल प्रभावों को आंकने के लिए कोई अनुसंधान किया गया है ; यदि हां, तो उन अनुसंधान के क्या निष्कर्ष निकले हैं ;

(ख) यदि नहीं, तो क्या सरकार निकट भविष्य में ऐसा अनुसंधान करने का विचार रखती है; और

(ग) यदि रासायनिक उर्वरकों के उपयोग से भूमि की उर्वरकता में कमी पाई गई है तो उस स्थिति से निपटने के लिए सरकार क्या कदम उठा रही है ?

कृषि मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री अरविन्द नेताम) : (क) जी हां, लम्बी अवधि के परीक्षणों से पता चला है कि रासायनिक उर्वरकों के सन्तुलित इस्तेमाल से फसलों की अधिक उपज तथा मिट्टी की उर्वरता बनाये रखी जा सकती है। फिर भी गहन खेती की हालत में केवल नाइट्रोजन , फास्फोरस अथवा पोटाश जैसे रासायनिक उर्वरक का इस्तेमाल करने पर मिट्टी की उत्पादकता कम होने की संभावना रहती है ।

(ख) भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अनुसंधान कार्यक्रम में उर्वरकों के इस्तेमाल के साथ ही पोषण प्रबन्ध सम्बन्धी अनुसन्धान को प्राथमिकता दी जाती रही है ।

(ग) मिट्टी की उच्च उत्पादकता को बरकरार रखने के लिए रासायनिक उर्वरकों तथा जैविक सामग्री के समेकित इस्तेमाल की सिफारिश की गई है तथा इसे अपनाने के लिए कृषि पारिस्थितिकी वाले क्षेत्रों के किसानों को प्रोत्साहित किया जा रहा है ।